आलोक स्मृति

● सन्तोष कुमार सिंह

H
811.8
Si 64 A

INDIAN INSTITUTE
OF
ADVANCED STUDY
LIBRARY, SHIMLA

आलोक-स्मृति

(शोक काव्य)

CATALOGUED

सन्तोष कुमार सिंह

साहित्य संगम प्रकाशन
मथुरा (उ०प्र०)

INDIAN INSTITUTE
OF
ADVANCED STUDY
LIBRARY, SHIMLA

आलोक-स्मृति

(शोक काव्य)

ACC NO.
DATE
SHIMLA

CATALOGUED

सन्तोष कुमार सिंह

साहित्य संगम प्रकाशन
मथुरा (उ०प्र०)

H
811.8
Si 64 A

Indian Institute of Advanced Study
ACC NO. 110633
DATE 14.2.2003
SHIMLA

Library IIAS, Shimla
H 811.8 Si 64 A
00110633

© सन्तोष कुमार सिंह

प्रथम संस्करण : 2000 ई०

मूल्य : 25 रुपये मात्र

प्रकाशक : साहित्य संगम प्रकाशन
बी 45, मोती कुँज एक्सटेंशन, मथुरा (उ०प्र०)

मुद्रक : आर. के. ऑफसेट
उल्धनपुर, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

शब्द सज्जा : ए.डी.पी. कम्प्यूटर्स, मथुरा (☎: 402691)

आवरण चित्रांकन : रावत कम्प्यूटर्स ग्राफिक्स, विकास बाजार, मथुरा

ALOK-SMRATI (SHOK KAVYA) : BY SANTOSH KUMAR SINGH Rs. 25/-

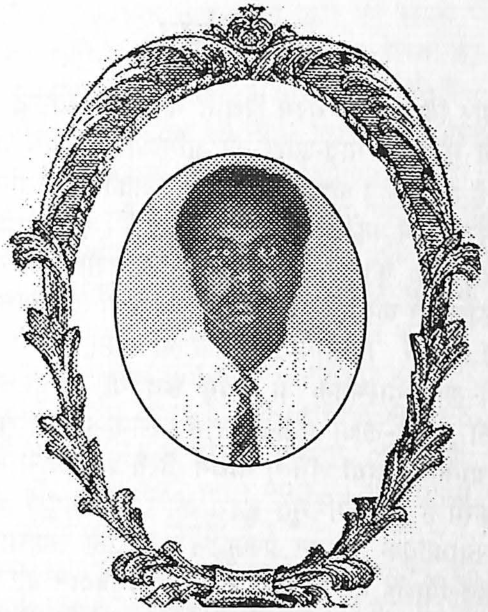

(स्व० आलोक प्रताप सिंह उर्फ मौनू)

जन्म – 18 नवम्बर सन् 1982 ई०

स्वर्गवास – 14 मार्च सन् 2000 ई०, दिन मंगलवार

◎

पुत्र तुम सुख से जियो, जाओ जहाँ पर।
किन्तु लम्बी आयु तुम, पाओ वहाँ पर।।

प्रवर्त्तिका

हर्ष और विषाद की चरम स्थिति में वाणी अवरुद्ध हो जाती है तब मानव-मन की उद्वेलित भाव-धारा की अभिव्यक्ति प्रथम तो अश्रु-प्रवाह के रूप में होती है और फिर कण्ठ खुलने पर उसकी अभिव्यक्ति प्रायः गानपूर्ण छिन्न शब्द-श्रृंखला में कविता के रूप में होती है। इन दोनों स्थितियों में हर्ष की अपेक्षाकृत शोक की स्थिति अधिक संवेदनशील और तरल होती है, तभी तो विरहानुभूति को पहले कवि की सम्प्रेरणा अनुमानित करते हुए पंत जी ने लिखा है कि "वियोगी होगा पहला कवि, आह! से उपजा होगा गान।" आदि-कवि वाल्मीकि के प्रथम छंद के प्रस्फुटन के मूल में भी क्रौञ्च-वध की करुण-कथा सर्वविदित है। लोक-जीवन में भी विरहानुभूति की पीड़ा में, ग्रामीण स्त्रियाँ रोने में गायन जैसी शब्दावली में स्वर निकालती देखी जा सकती हैं। शोकाभिभूत हृदय की यह गानपूर्ण अभिव्यक्ति कविता का ही एक स्वाभाविक अस्पष्ट प्रस्फुटन कहा जा सकता है।

प्रियजन-विछोह की विभिन्न कोटियों में जवान बेटे की असमय मृत्यु संभवतः वियोग की सर्वोच्च कोटि है। 'आलोक-स्मृति' के रचनाकार सन्तोष कुमार सिंह ने इसी वियोग से पीड़ित अपने छिन्न-हृदय की सघन शोकानुभूति को इस काव्य-कृति में अत्यन्त मार्मिक रूप में साकार किया है। सड़क-दुर्घटना में एक अनियन्त्रित टेंकर द्वारा कार के कुचले जाने पर कवि का प्रतिभाशाली युवा-पुत्र 'आलोक' काल-कवलित हो जाता है। इस पुत्र के वियोग में ही 'आलोक-स्मृति' काव्यकृति की रचना की है। कवि ने इसे दस प्रस्तुतियों में पल्लवित किया है। कवि ने ऐसी कृति रचने की कभी कल्पना भी नहीं की थी, तभी तो अत्यन्त दुखी मन से कहा है–

दिल तो भारी दुखता है अब/पिता अभागा लिखता है अब।

कवि ने, पुत्र का घर से आगरा जाना, दुर्घटनाग्रस्त होना, अचेतनावस्था में अस्पताल में लेटा होना, उसके भाई के व्याकुल होने और शोक में डूब जाने का सजीव चित्रण बड़े ही मार्मिक शब्दों में किया है। जिस प्रकार लक्ष्मण के मूर्छित होने पर भगवान राम ने विलाप किया था, ठीक उसी तरह आलोक का भाई विलाप करते हुए कहता है–

'पीर कितनी भ्रात को है भ्रात की, यह जानते हैं/भ्रात लक्ष्मण-सा पड़ा है, क्यों नहीं यह मानते हैं।।'

हर माँ अपने बेटे को बड़े लाड़-प्यार से पालती है। बेटा कैसा भी हो, माँ उसे हृदय से दुलारती है, किन्तु जब वह स्वयं अस्पताल की शय्या पर दुख सह रही हो और बेटा काल का ग्रास बन जाए , उसकी दाह क्रिया

हो जाए , वह पुत्र के अन्तिम दर्शन भी न कर पाये, ऐसी अभागी माँ पर क्या बीती, उसकी हृदय-वेदना तथा स्वयं कवि की सघन पीड़ानुभूति को स्मृतियों में पिरोकर कवि ने चित्रोपमरूप में प्रस्तुत किया है। शोक में डूबे कवि के समक्ष शाश्वत सत्य को स्वीकारने के अतिरिक्त कोई चारा दृष्टिगोचर नहीं होता। इस काव्य की नौवीं तथा दसवीं प्रस्तुतियों में कवि अपनी विवशता और नियति के निर्णय को स्वीकारता हुआ कहता है–

जल नयन का सूख जाए, आज सारा/लौटकर ना आएगा 'आलोक' प्यारा।।
श्वास जब तक देह में, जीना पड़ेगा/ फट गया है जो हृदय, सीना पड़ेगा।।
सिर्फ़, तेरी य़ाद मेरे साथ में है/ जिंदगी की डोर प्रभु के हाथ में है।।

'आलोक-स्मृति' काव्य, पुत्र-वियोग की पीड़ा का एक सशक्त काव्य है। इसके कथ्य का भाव-पक्ष पाठकों को अभिभूत करने में जितना सक्षम है, उतना ही इसका निर्दोष शिल्प-विधान तथा इसकी प्रवाह पूर्ण शैली उसे तरलित करने में सफल है। छन्दसिक शुद्धता, लय तथा गति का शुद्ध निर्वाह एवं भाव और भाषा का सफल संयोजन इस काव्य को एक *श्रेष्ठ खण्डकाव्य* की कोटि तक ले जाता है।

करुण-रस का पर्यवसान शान्त रस में करने वाला यह काव्य आद्योपान्त साधारणीकरण की श्रेष्ठ क्षमता से परिपुष्ट है। 'डोर प्रभु के हाथ में' देकर कवि ने भारतीय आर्ष काव्य-परम्परा में एक और कड़ी जोड़ते हुए अपनी उदात्त रचनाधर्मिता का परिचय दिया है। इस कृति को रचकर प्रिय श्री सन्तोष कुमार सिंह ने अपने हृदय का उद्‌गार तो व्यक्त किया ही है, उन्होंने आज के वस्तुवादी रूक्ष हो रहे काव्य-जगत् में मानवीय संवेदनाओं को पुनर्जीवित करने का भी एक स्तुत्य प्रयास किया है, इसके लिए कवि साधुवाद का पात्र है। मुझे विश्वास है कि हिन्दी काव्य-जगत् में इस काव्य-कृति का अच्छा स्वागत होगा।

हार्दिक् शुभकामनाओं सहित–

डॉ० अनिल गहलौत
रीडर एवं शोध-निदेशक
हिन्दी विभाग
के०आर० कॉलेज मथुरा (उ०प्र०)

गंगा दशहरा
सम्वत् 2057 विक्रमी

आत्म कथन

'आलोक–स्मृति' एक शोक काव्य है। इसमें कवि–हृदय की पीड़ाएँ संग्रहीत हैं। वास्तव में, पुत्र-वियोग में लिखी गई, यह एक करुण कहानी है।

इस काव्य का मुख्य नायक "मास्टर आलोक प्रताप सिंह उर्फ मौनू है, जो कवि का होनहार पुत्र था। एक पुत्री और दो पुत्रों में, वह सबसे छोटा था। इसका जन्म महिला चिकित्सालय वृन्दावन जनपद मथुरा में 18 नवम्बर सन् 1982 को हुआ था, किन्तु विद्यालय में इसकी जन्मतिथि 25 सितम्बर सन् 1983 अंकित है। स्नेहवश एक रिश्तेदार ने इसका नाम आलोक प्रताप सिंह रखा था, परन्तु इसे प्यार से सभी मौनू पुकारा करते थे।

जब यह पैदा हुआ था, तब यह अत्यन्त कमजोर बालक था। युवा होने के निकट पहुँचा, तो शरीर का विकास अच्छा हो गया था। परिवार के सभी लोग उसकी तरुणाई देखकर बहुत खुश थे। सत्रह वर्ष और चार माह की आयु में 5 फुट 11 इन्च का युवा दिखाई देता था। आलोक का रँग साँवला था, किन्तु आकर्षक छवि और हँसमुख स्वभाव का वह एक बुद्धिमान बालक था। आज्ञाकारी एवं सेवा-भावना उसके खून में रची-बसी थी।

प्रारम्भ से ही, वह प्रतिभाशाली छात्र रहा था। हाईस्कूल तक की शिक्षा, उसने 'सैक्रेड हर्ट कॉन्वेट हायर सैकेण्डरी स्कूल मथुरा' से प्राप्त की थी। ग्यारहवीं कक्षा में उसने 'दिल्ली पब्लिक स्कूल रिफायनरी नगर मथुरा' में प्रवेश ले लिया था। हाईस्कूल की परीक्षा में पाँच विषयों में विशेष योग्यता और 81.3 प्रतिशत अंक पाने वाले पुत्र को पाकर माता–पिता फूले नहीं समाते थे। अध्यापक भी उसकी योग्यता, अनुशासन एवं आदर-भावना से प्रसन्न रहते थे, किन्तु ईश्वर को यह सब मंजूर नहीं था। आलोक की माँ बीमार हुई, आगरा इलाज के लिए भर्ती की गई और दूसरे दिन ही सकुशल आपरेशन भी हो गया। इसी दिन ग्यारहवीं कक्षा की परीक्षा भी समाप्त हो गई। आलोक बहुत प्रसन्न था। एक तो माँ का सकुशल आपरेशन हो गया, दूसरे उसके पेपर्स अच्छे हुए थे, किन्तु प्रभु ने उसे परीक्षा-परिणाम आने तक का अवसर नहीं दिया। उसने आलोक को हम

सबसे छीन लिया।

परीक्षाफल को हाथ में लेकर माँ–बाप फफक–फफक कर रो पड़े। बेटे ने तीन विषयों में विशेष योग्यता पाई थी, और रसायन विज्ञान में सौ प्रतिशत अंक पाकर एक नया इतिहास रचा था। यह भाग्य की बिडम्बना ही थी, कि 14 मार्च सन् 2000 दिन मंगलवार को, वह अपनी बीमार माँ को देखने आगरा जा रहा था। एक पड़ौसी श्री घनश्याम सिंह अपनी पत्नी श्रीमती सरोज एवं पुत्री 10 वर्षीया नेहा के साथ आगरा जा रहे थे। आलोक भी उन्हीं के साथ मारुति कार में बैठ गया। लगभग 18–20 कि०मी० की यात्रा तय की होगी, कि गलत रास्ते और लापरवाही से आते टेंकर ने, सामने से टक्कर मार कर मारुति को बुरी तरह कुचल दिया। उन तीनों ने वहीं दम तोड़ दिया, किन्तु आलोक घायल था, वह पूरे होशो–हवास में था। राहगीरों ने उसे शीघ्र ही, निकट के स्वर्ण-जयन्ती अस्पताल में भर्ती करा दिया था, किन्तु इस अस्पताल के चिकित्सक की अयोग्यता, अमानवीयता और लापरवाही ने आलोक के प्राण हर लिए। करोड़ों रुपयों से निर्मित विशाल चिकित्सालय में ऑक्सीजन गैस की अनुपलब्धता और चिकित्सक की अयोग्यता लोगों में चर्चा का विषय बन गई।

आलोक के आकस्मिक निधन से परिवार में गहरा शोक व्याप्त हो गया। माता–पिता के सारे सपने पलभर में चूर–चूर होकर बिखर गये। परिवार के लिए यह वज्रपात असहनीय था, चारों ओर हा–हाकार मच गया। 'हा आलोक! हा आलोक' का करुण क्रंदन गली, मुहल्लों से होता हुआ, शहर और गाँवों में पहुँच गया। काल के विकराल रूप को देखकर सभी हतप्रभ थे। सभी का हृदय रो रहा था, चक्षु निर्झर बने थे, किन्तु प्रभु के निर्णय के समक्ष सभी अपने को बौना और असहाय पा रहे थे। परिस्थितियों से समझौता करने के अलावा दूसरा विकल्प दुनिया में विद्यमान नहीं है।

प्रिय पाठको, कुछ विभूतियाँ अमर होती हैं। उनकी यादें किसी न किसी रूप में लोगों के मन–मस्तिष्क में अंकित रहती हैं; आलोक भी उन्हीं अमर विभूतियों में से एक था। वह योग्य, बुद्धिमान, सहनशील, सेवाभावी, सदाचारी और विनम्रता जैसे सद्गुणों वाला बालक था। जिसने भी उस तरुण बालक को नजदीक से जाना और परखा, वह उसे जीवनपर्यन्त भूल न पाएगा। हे आलोक! तू अमर रहेगा। मन–मस्तिष्क से कभी न विस्मृत हो

सकेगा। 'आलोक–स्मृति' के रूप में मैं तुझे 'काव्यान्जलि' अर्पित करता हूँ।

मैं, आदरणीय डॉ० अनिल गहलौत, डॉ० जगदीश व्योम एवं श्री दिनेश पाठक 'शशि' का विशेष आभारी हूँ, जिन्होंने अपना अमूल्य समय निकाल कर रचनात्मक परामर्श के साथ–साथ पुस्तक प्रकाशित कराने में विशेष योगदान प्रदान किया। अंत में, मैं अपनी पुत्री नीलम, पुत्र जितेन्द्र ज्येष्ठ भ्राता श्री इन्द्रपाल सिंह, श्री देवीप्रसाद गौड़, चौ० भगवान सिंह, डॉ० सतीश टण्डन, डॉ० जी०के० सिंह एवं श्री बी०पी० शर्मा (दिल्ली पब्लिक स्कूल) का विशेष रूप से आभारी हूँ, जिनकी प्रेरणा से 'स्व० आलोक' की स्मृतियों को काव्य के रूप में संग्रहीत करने का मैं साहस जुटा सका।

'चित्र निकेतन'
बी 45, मोतीकुँज एक्सटेंशन
मथुरा –281001

एक अभागा पिता–
सन्तोष कुमार सिंह

पिता अभागा लिखता है

दिल पापा का सदा कहेगा।
हे बेटा! तू अमर रहेगा।।
दिल तो भारी दुखता है अब।
पिता अभागा लिखता है अब।।

एक

प्रभु देता है संकट जिसको।
कौन रोक सकता है उसको?
वह झोली को सुख से भर दे।
पल में कुछ का, कुछ है कर दे।।
नाव डूबती लगे किनारे।
या फिर छोड़े बिना सहारे।।
जिस घर बगिया महक रही हो।
निशदिन मैया चहक रही हो।।
पाई खुशियाँ जिस घर सारी।
सन्तानों पर हों बलिहारी।।
प्रभु के ही गुण निशदिन गाते।
मन में मंगल मोद मनाते।।
उस घर में प्रभु संकट डालें।
उनका बेटा स्वयं उठा लें।।
सोचो घर का क्या हो हाल।
होवें माता-पिता बेहाल।।
युवा पुत्र को जब खोयेंगे।
बिलख-बिलख कर वे रोयेंगे।।
रो-रो कर चाहे थक जाएँ।
हरि इच्छा को टाल न पाएँ।।
लूट किसी की, कृपा किसी पर।

प्रभु का निर्णय चले सभी पर।।
कोई मलबे में दब जाए।
हफ्तों बीतें बिन ही खाए।।
जीवित तब भी बच जाता है।
संकट उसका टल जाता है।।
प्रभु के खेल निराले होते।
उसके दुख अनटाले होते।।
टले नहीं जो भी होनी है।
यह घटना भी अनहोनी है।।
था 'आलोक' दुलारा बेटा।
खाना खाकर वहां था लेटा।।
ट्रिंन-ट्रिंन करके फोन बज उठा।
बहिना के संग भ्रात जग उठा।।
बोल रहे थे श्री घनश्याम।
पूछा, अंकल क्या है काम?
कहा- आगरा जाना हमको।
मौनू को ले जाना हमको।।
वहाँ तुम्हारी माँ है भरती।
उन्हें देखने तबियत करती।।
पत्नी को भी दिखलाना है।
'चैक अप' उसका करवाना है।
बहिना बोली सोया है वह।
मधुर स्वप्न में खोया है वह।।
बोले, वह तो जग जाएगा।
वह भी माँ से मिल आएगा।।
अपनी मारुति में जाएँगे।
साथ उसे भी ले जाएँगे।।
'मौनू-मौनू' बहिना बोली।

सुनकर उसने अँखियाँ खोली।।
जगकर आया, जाना हाल।
पर जाने का नहीं ख़याल।।
मना किया था भैया ने भी।
'सॉरी' बोला बहिना ने भी।।
किन्तु फोन उनका फिर आया।
मन मौनू ने तभी बनाया।।
बैठ कार में जाऊँगा मैं।
माँ को जा हरषाऊंगा मैं।।
पहन वसन घर पहुँचा उनके।
संग कार में बैठा उनके।।
सरपट भर कर दौड़ी कार।
खुश बैठे थे सभी सवार।।
मंजिल उनकी दूर नहीं थी।
पर प्रभु को मंजूर नहीं थी।।
बीस किलोमीटर चल पाए।
टेंकर-मारुति हैं टकराए।।
प्रभु का भेजा काल आ गया।
आकर तत्क्षण उन्हें खा गया।
प्रभु ने बेटा छीन लिया है।
कैसा मुझ पर ज़ुल्म किया है।।
बेटा, हा! 'आलोक' हमारा।
छोड़ हमें परलोक सिधारा।।
दिल तो भारी दुखता है अब।
पिता अभागा लिखता है सब।।
दिल पापा का सदा कहेगा।
हे बेटा! तू अमर रहेगा।।

●

भ्रात लक्ष्मन-सा पड़ा है

पीर कितनी भ्रात को है।
भ्रात की, यह जानते हैं।
भ्रात लक्ष्मण-सा पड़ा है।
क्यों नहीं यह मानते हैं ?

दो

स्तब्ध थीं सारी दिशाएँ, क्रूर हौनी हँस पड़ी थी।
सृष्टि जैसे थम गई हो, एक पल ऐसी घड़ी थी।।

ये लगा भूचाल जैसे हा! अचानक आ गया है।
हर कोई यह पूछता है, काल किसको खा गया है?

वाहनों की हुई टक्कर, शब्द गर्जन घोर छाया।
चीख कर चिड़ियां उड़ीं, हर ओर भारी शोर छाया।।

शब्द जिसने भी सुना, वह दौड़ करके आ गया है।
दृश्य वह वीभत्स देखा, दृग अंधेरा छा गया है।।

मौत बनकर एक वाहन, दीखता अब भी खड़ा है।
कार को पूरी कुचल कर, दैत्य-सा अब भी अड़ा है।।

प्राण लीले तीन के, घायल हुआ 'आलोक' देखो।
हर हृदय में क्षोभ था, हर ओर छाया शोक देखो।।

होश इतना था, पता घर का बताया है स्वयं ही।
हैं फँसे घनश्याम अंकल, ये दिखाया है स्वयं ही।।

रिफाइनरी में कार्यरत, पापा अभी हैं आगरा में।
ऑपरेशन हुआ माँ का, इसलिए हैं आगरा में।।

गलत पथ पर एक टेंकर, यह अचानक आ गया है।
बेकसूरों को निमिष में, काल बनकर खा गया है।।

मृत पड़े थे तीन कुचले, एक यह घायल पड़ा है।
'कार कोई रोककर अब ले चलो'- सबने कहा है।।

चोट मामूली लगी है, भूलवश यह जान बैठे।
हैं सुरक्षित प्राण इसके, बात मन में मान बैठे।।

किन्तु सिर में चोट भारी, भीतरी, समझा न कोई।
काल की गति, खेल क्या है खेलती, समझा न कोई।।

जो चिकित्सालय निकट था, वह वहाँ पहुँचा दिया है।
फिर अचेतन हो गया हा! आलोक सब बिसरा दिया है।।

आ गया अंजान राही उस समय बन राम कोई।
कर दिया बस आदमी का, कर सके जो काम कोई।।

कर उसे भरती लगा उसको, कि यह बच जायगा अब।
जब खुलेंगे नयन यह, खुद को सुरक्षित पायगा अब।।

कुछ न चिंता कीजिए अब, यह चिकित्सक बोलता है।
एक्सरे की वह मशीनों को फटाफट खोलता है।।

सूचना ज्यों ही मिली, भ्राता बड़ा भी आ गया है।
देख कर 'आलोक' को, उस वक्त वह घबरा गया है।।

एक्सरे-मस्तिष्क के, यह क्यों उतारे जा रहा है?
'स्केन-सी.टी.' चाहिए, भ्राता पुकारे जा रहा है।।

है चिकित्सक कौन यह? ना कार्य इसका भा रहा है।
है समय बहुमूल्य कितना, व्यर्थ करता जा रहा है।।

है चिकित्सक या कसाई, कौन अब इसको बताए।
डेढ़ घन्टे कीमती भी, देख लो इसने गँवाए।।

एक ए.टी.एस. और ग्लूकोज इसने दे दिया है।
और क्या जीवन बचाने के लिए इसने किया है।।

मृत्यु का प्रतिनिधि बना है, कीजिए पहचान इसकी।
लग रहा शैतान, कैसे अब बचेगी जान इसकी ?

यह सुना तो कह उठे सब, ले चलेंगे आगरा अब।
प्रभु करेंगे सब भला, क्यों हो रहा है बाबरा अब।।

ऑक्सीजन के सिलिंडर की, मनाही कर रहे हैं।
एम्बुलेंस भी, ये नहीं देते ढिठाई कर रहे हैं।।

सब स्वजन घबरा गए, माया रची क्या ईश ने ये ?
लाख बाधाएँ उपस्थित, आज कीं जगदीश ने ये।।

हे विधाता! बेधते क्यों? इस अभागे वक्ष को हैं।
फल न आया, पूर्व इसके, काटते क्यों वृक्ष को हैं ?

राम क्यों अन्याय मुझ पर आज तुम यह कर रहे हो?
आप ईश्वर हैं स्वयं, क्यों काल से फिर डर रहे हो?

भ्रात को है पीर कितनी भ्रात की, यह जानते हैं।
भ्रात लक्ष्मण-सा पड़ा है, क्यों नहीं यह मानते हैं?

आपके हैं भक्त हनुमत, भक्त मैं हनुमान का हूँ।
कुछ नहीं उनको असम्भव, बात यह मैं जानता हूँ।।

गहन मूर्छित एक लक्ष्मण, आज फिर देखो पड़ा है।
वीरवर हनुमान तुमसे, वीर ना कोई बड़ा है।।

आप हैं आराध्य, बूटी फिर कहीं से लाइयेगा।
सो रहा है भ्रात मेरा, आप ही जगवाइयेगा।।

खोल मेरे भ्रात अपने, शीघ्र लोचन खोल दे अब।
सामने संकट विमोचन, बोल तो कुछ बोल दे अब।।

आपका ही है सहारा, आज मंगलवार भो है।
यदि अमंगल हो गया तो, व्रत विफल, बेकार ही है।।

वस्त्र सारे ही उतारे, सिर्फ कच्छा शेष तन पर।
एक कम्बल तक नहीं है, ठण्ड में इसके बदन पर।।

ओ चिकित्सक! देख ली बस, आपकी इन्सानियत ये।
जो नियति में है, वही होगा, मगर हैवानियत ये??

●

नहीं किसी की सुनी

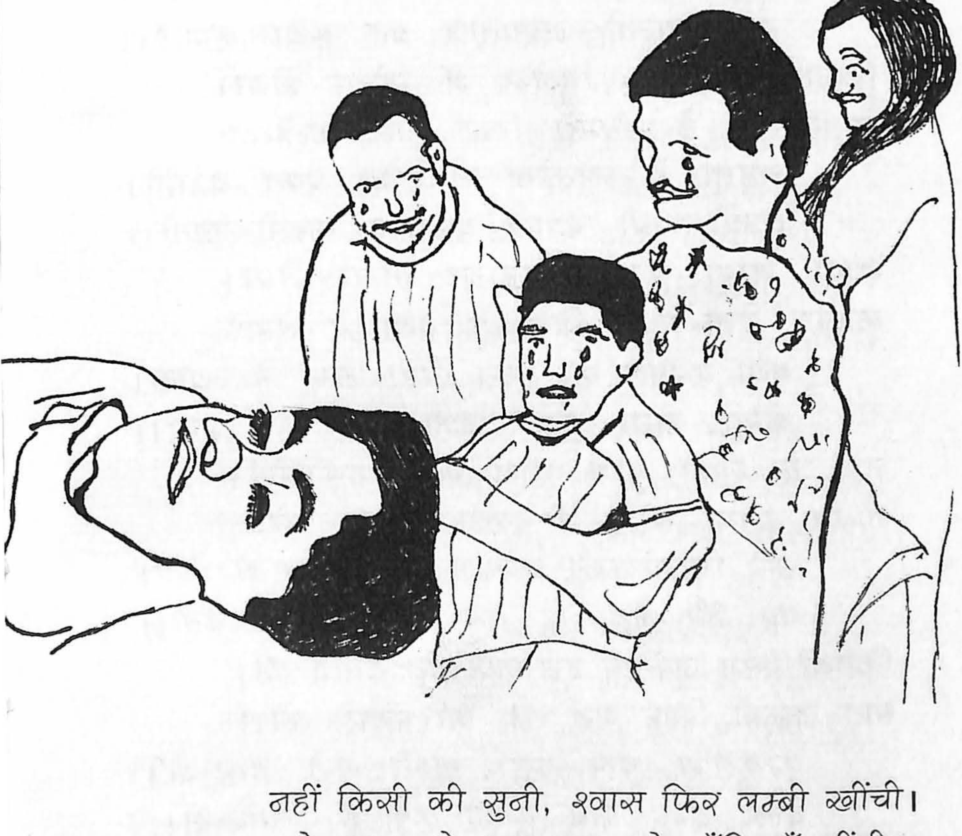

नहीं किसी की सुनी, श्वास फिर लम्बी खींची।
अरे भ्रात! ने सदा-सदा को अँखियाँ मींची।।

तीन

जुटे, स्वजन सब चले, उसे लेकर 'जी. जी.' को।
याद किया सबने नटवर को औ' श्रीजी को।।
एम्बुलेंस भी नहीं अरे! उपलब्ध कराई।
स्वर्णजयन्ती अस्पताल बन गया कसाई।।
रिफाइनरी की एम्बुलेंस में सोया भैया।
माता तेरा देख पड़ा किस हाल कन्हैया?
चढ़ता है ग्लूकोज नासिका रक्त बहाती।
लम्बी-लम्बी श्वास देखकर फटती छाती।।
नंगा सारा बदन लिटाया भैया मेरा।
कम्बल देता उढ़ा बिगड़ता क्या रे तेरा?
क्या कम्बल का मूल्य अरे! भैया से ज्यादा।
करवा लेता मूल्य जमा पहले ही दादा।।
नहीं दे सका तुच्छ चीज मानवता खोई।
मानव इतना नीचे भी क्या गिरता कोई?
अरे चिकित्सक! कम्बल की कीमत ले लेता।
पर मेरे भैया के तन को तो ढँक देता।।
कितनी परम जरूरत इस क्षण तन ढँकने की।
बात ज़रूरी सिर्फ़ गर्म तन को रखने की।।
एम्बुलेंस चल पड़ी सभी बैठे हारे-से।
देख दशा सब दुखी हुए हैं बेचारे-से।।

दशा देखकर ज्येष्ठ भ्रात की फटती छाती।
किन्तु किरण आशा की उर में अब भी बाकी।।
हैं निढाल, कोमा में, निश्चल पड़ा हुआ है।
भाँति-भाँति की शंकाओं से मन जुड़ा हुआ है।।
दौड़ रही थी गाड़ी सत्वर, सभी विकल थे।
बहुत अधिक लम्बे लगते, चिन्ता के पल थे।।
झूठा ढाढस स्वजन मुझे ही बँधा रहे हैं।
अपने मन भी अन्दर-अन्दर कँपा रहे हैं।।
हाय! मुड़ी जब अस्पताल- 'जी. जी.' को गाड़ी।
काल हुआ विकराल और भी निष्ठुर भारी।।
बिगड़ी दशा और ज्यादा, डगमग नैया की।
नाड़ी देखो और मंद होती भैया की।।
नहीं किसी की सुनी श्वास फिर लम्बी खींची।
अरे भ्रात! ने सदा-सदा को अँखियाँ मींची।।
ऐसा लगा हृदय फट जाएगा मेरा अब।
सचमुच आज विधाता ने लूटा मेरा सब।।
किया अकेला मुझे साथ भी छोड़ा तूने।
इतना हुआ कठोर अरे! मुख मोड़ा तूने।।
करता सबसे प्यार, किन्तु तुझसे था ज्यादा।
ठुकरा करके प्यार, बता फिर क्यों है भागा?
हे आलोक! तुझी से था, यह आलोकित घर।
काल चक्र की नज़र पड़ी, कैसी इस घर पर?
अस्पताल की शैया पर, माँ विवश पड़ी है।
मोड़ चला मुख तू भी, कैसी अशुभ घड़ी है।।
दर्द भुलाने आया था, अपनी मैया का।
दर्द बढ़ा कर चला गया, पापा, भैया का।।

माँ पर क्या गुजरेगी सुनकर, तू क्या जाने ?
फट जाएगा हृदय, पीर तू क्या पहचाने ?
स्वप्न सत्य-सा लगे, नयन तू अब खोलेगा।
दिल का हाल बताने, तू शायद बोलेगा।।
स्वजन तसल्ली दे-दे कर मुझको समझाते।
झूठे लगते बोल न मुझको उनके भाते।।
आँख खोल कर देख पिताजी अपने आए।
बदहवास हैं, पागल जैसे हैं घबराए।।
पास डाक्टरों के जाकर, कर जोड़ रहे हैं।
किन्तु हाय! वे सारे ही, मुख मोड़ रहे हैं।।
तेरे लिए पैर भी उनके, पकड़ रहे हैं।
मोह और माया में, भारी जकड़ रहे हैं।।
देख हुए मजबूर सभी विधि पिता हमारे।
प्रभु के आगे हुए अरे! लाचार बिचारे।।

●

बस यादें शेष रहीं तेरी

था चार बरस का लाल कभी।
मन सबके शेष ख़याल अभी।।
अब किस्मत फूट गई मेरी।
बस यादें शेष रहीं तेरी।।

Indian Institute of Advanced Study
ACC NO. 110633
DATE 14.2.2003
SHIMLA

चार

हम गर्व किया करते तुम पर।
हैं राम-लखन प्यारे हम पर।।

फिर चिन्ता होती भी कैसे?
तुम युवा हुए जैसे-तैसे।।

था खुशियों से घर भरा-भरा।
मन मेरे चिन्ता नहीं ज़रा।।

कुढ़ता भी होगा यदि कोई।
जलता भी होगा यदि कोई।।

वे मन की बात छुपाते हों।
दिल अपना स्वयं जलाते हों।।

जब मुझमें दोष न पाते वे।
क्या कहने? मुझसे आते वे।।

बदले के बीज न बो पाया।
हाँ, मैंने सबको अपनाया।।

बस यही सिखाया था तुझको।
'अपनत्व' पढ़ाया था तुझको।।

बचपन में ही हँस कर जीना।
सीखा तूने गुस्सा पीना।।

तूने खूब हँसाये ताऊ।
तूने खूब मनाये ताऊ।।
तू ही रोज जगाता उनको।
मीठी चाय पिलाता उनको।।

फिर क्यों आज रुलाए तूने?
सबके हृदय दुखाए तूने।।
सहपाठी भी सब रोते हैं।
धीरज अपना सब खोते हैं।।

अध्यापक जब आते होंगे।
बैठा तुझे न पाते होंगे।।
ख्याल हृदय में लाते होंगे।
फिर मन को समझाते होंगे।।

आदर सबका करने वाला।
अनुशासन में रहने वाला।।
कहाँ गया है तू आलोक!
देकर जीवन भर का शोक।।

झगड़ा करता कभी न पाया।
गैरों को भी खूब हँसाया।।
सदा दूर ही रखी बुराई।
इतनी अक्ल कहाँ से पाई?

जब-जब तेरा भान करूंगा।
मैं तुझ पर अभिमान करूंगा।।
किन्तु हुआ है जीवन फीका।
आज गरल को पीना सीखा।।

किन्तु न जीना भाता मुझको।
बहुतेरा समझाता मन को।।
नीलम, सौनू समझाते हैं।
खुद भी आँसू ढरकाते हैं।।

सबको ही बस भूल गया तू।
चुभो, हृदय में शूल गया तू।।
तूने कब हैं नाना देखे।
जीवित हैं फिर भी अनदेखे।।

तेरी माँ इकलौती बेटी।
रही भाग्य की ज्यादा हेटी।।
प्यार पिता का मिला न इसको।
अपनी पीर बताती किसको ?

प्यार पिता ने कहाँ लुटाया?
इसको अब तक नहीं बताया।।
प्यार इसे. क्यों करने आते ?
और किसी से होंगे नाते।।

तू दुनिया से चला गया है।
सारी दुनिया रुला गया है।।
उनका दिल है शीतल शिमला।
इसीलिए अब भी ना पिघला।।

था चार बरस का लाल कभी।
मन सबके शेष ख़याल अभी।।

जब सफ़र ट्रेन का जारी था।
मौसम भी ठन्डा भारी था।।

थी सांझ हुई, दोपहर गई।
स्टेशन पर गाड़ी ठहर गई।।

बाहर खिड़की से देख रहा।
था धूप अभी तक सेक रहा।

कुछ बेंण्डर आते-जाते थे।
'लो चाय पिओ', चिल्लाते थे।।

वे आते थे, फिर जाते थे।
पर चाय न तुझे पिलाते थे।।
तब भोले मन से बोल पड़ा।
धीरज की गठरी खोल पड़ा।।
ये बार-बार चिल्लाते हैं।
पर चाय न हमें पिलाते हैं।।
सुन हँसी आ गई हम सबको।
तब चाय पिलाई थी तुझको।।
फिर हँस-हँस कर बतलाया था।
हाँ तुझको यह समझाया था।।
जो पैसे इन्हें चुकाते हैं।
उनको ही चाय पिलाते हैं।।
जब आठ साल का छोरा था।
तू गया गाँव कैलोरा था।।
बुग्गी में हँस कर बैठ गया।
ताऊ के सँग में पैंठ गया।।
वह बुग्गी तुझको भायी थी।
तब तुझसे भी चलवायी थी।।
तू बुग्गी रोज़ चलाता था।
फिर बैठ खेत पर जाता था।।
अब किस्मत फूट गई मेरी।
बस यादें शेष रहीं तेरी।।

●

अब किस पर गर्वित होगी माँ

देख कमल-सी खिल जाती थी।
पीर उसी पल धुल जाती थी।।
अब कैसे हर्षित होगी माँ ?
अब किस पर गर्वित होगी माँ ?

पाँच

बहुत चाहती मैया तुझको।
कभी बोलती भैया तुझको।।

भूखा तुझे न जाने देती।
भोजन तुझको खा ने देती।।

पेट खराब बता देता तू।
माँ को मूर्ख बना देता तू।।

ममता से थाली भर लाती।
खा ले बेटा जिद कर जाती।।

तब गुस्सा तुझको आती थी।
माँ बेबस चुप रह जाती थी।।

टिफिन बैग में धर देती थी।
सब्र हृदय में कर लेती थी।।

तू बस्ता लेकर जाता था।
तब उसके मन को भाता था।।

पीछे-पीछे आती थी वह।
देख तुझे हरसाती थी वह।।

तुझको खूब हँसाया करती।
मन में खूब सिहाया करती।।

लौट काम में जुट जाती फिर।
स्वयं रुग्ण थी, थक जाती फिर।।

सारा काम संभाला करती।
चकरी बनकर दिन भर नचती।।
समय लेटने का होता जब।
समय लौटने का होता तब।।
पड़ी विचारा करती थी वह।
घड़ी निहारा करती थी वह।।
पाते ही आहट चल देती।
ना चलने में कुछ पल लेती।।
देख कमल-सी खिल जाती थी।
पीर उसी पल धुल जाती थी।।
अब कैसे हर्षित होगी माँ?
अब किस पर गर्वित होगी माँ?
बछड़ा तू वह थी गैया।
अब कैसे धीर धरे मैया।।
बहुत चाहता था तू हमको।
विधि ने छीन लिया पर तुझको।।
घायल पूत हुआ होगा जब।
सम्मुख मृत्यु-दूत होंगे तब।।
किन्तु न साहस तब डोला था।
फिर भी तू मुख से बोला था।।
"अरे! पिताजी घबड़ायेंगे।
माँ को पड़ी, छोड़ आयेंगे।।"
समाचार सुन भागा था मैं।
सचमुच बड़ा अभागा था मैं।।
मैं दौड़ा-दौड़ा आया था।
पर तुझे न जीवित पाया था।

आह! बज्र-सा टूटा था तब।
हाय! मुकद्दर फूटा था तब।।
दौड़ रहा मैं बदहवास था।
रुका नहीं क्यों अरे! श्वास था?
जब मेरी किस्मत रूठी थी।
तब हड्डी-पसली टूटी थी।।
जब बिस्तर में पड़ा रहा था।
तू सेवा में अड़ा रहा था।।
हँस-हँस ध्यान बटाता मेरा।
हर पल कष्ट घटाता मेरा।।
होता पुलकित मेरा तन-मन।
कहता सब कुछ पाया भगवन।।
यद्यपि तब तो तू बच्चा था।
पर मन का कितना अच्छा था।।
तू सेवा का रहा पारखी।
मैं निकला हूँ बड़ा स्वार्थी।।
तूने सेवा नहीं कराई।
खाई कोई नहीं दवाई।।
चम्मच भर तक पिआ न पानी।
हृदय चुभेगी यही कहानी।।
कुछ तो बात बता देता तू।
अपनी पीर जता देता तू।।
जीवन भर तक पछताऊँगा।
तुझको नहीं भुला पाऊँगा।।

●

भुजा कट गयी मेरी अब

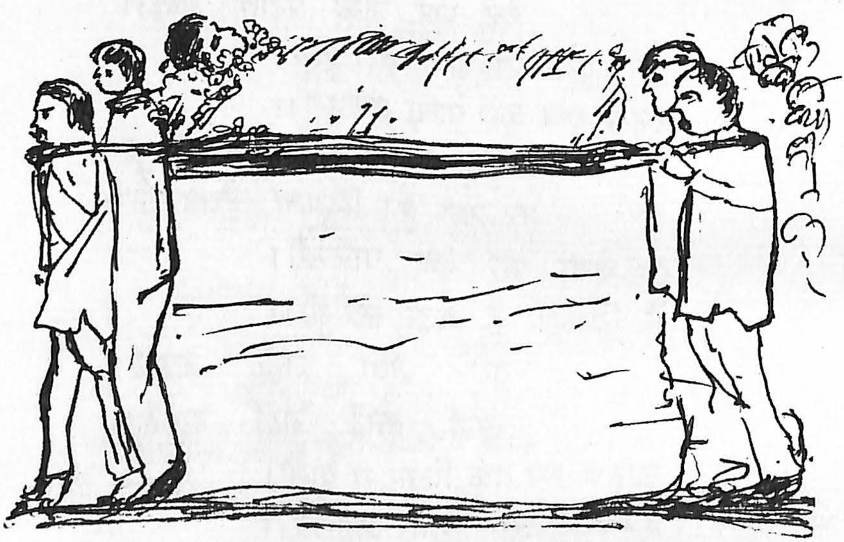

भुजा कट गई मेरी अब/
विकलांग हुआ हूँ जैसे।
बना सहारा था तू मेरा/
भार उठाऊँ कैसे।।

छह

आ देख अरे आलोक! मित्र ये दीपक आया है।
यह तेरा आज परीक्षाफल भी सँग में लाया है।।
तीस मार्च सन् दो हजार है, आज डसे यह मनको।
कठिन परिश्रम किया साल भर, तूने भी इस दिन को।।
मैं धीरज कैसे धरूं? अभागा तेरा पापा हूँ।
यह तेरा देख परीक्षाफल मैं खोता आपा हूँ।।
अरे! अभागी मैया तेरी फूट-फूट कर रोई।
स्वयं लाड़ला लेकर आता, क्यों लाता यह कोई।।
ये कितने अच्छे अंक वत्स ने, अबके पाए हैं।
'कैमिस्ट्री' में बेटा तेरे, सौ में सौ आए हैं।।
कई विषय में डिक्टेंशन भी लाया मेरा बेटा।
कैसे धीरज धरे पिता, ये है किस्मत का हेटा।।
शिक्षा में तेरी अभिरुचि थी, खूब पढ़ाई करता।
आई नहीं शिकायत कोई, किंचित नहीं झगड़ता।।
बच्चों से था नेह, बड़ों को तू आदर देता था।
मूल्यवान निज राय, सभी को तू सादर देता था।।
मॉडल स्वयं बनाया तूने, वह अब्बल आया था।
गौरवशाली पुरस्कार, तू दिल्ली से लाया था।।
चीफ मिनिस्टर के कर कमलों, पुरस्कार जब पाया।
वहाँ उपस्थित तेरा भैया, फूला नहीं समाया।।

अंक बयासी प्रतिशत तूने, हाई स्कूल में पाए।
देख अंक तेरे फूफाजी, मन में अति हर्षाए।।

प्रथम बार उनके उर से, थीं जन्मी काव्य-बधाई।
शायद यही रहेगी उनके जीवन की कविताई।।

पत्र देखकर आँसू बहते, अपना हृदय दुखाऊँ।
पोस्टकार्ड पर लिखी बधाई, फिरसे आज सुनाऊँ।।

"पत्र प्राप्त कर अनुपम तेरा, ऐसा मन लहराया है।
आसमान से उतर देव कोई, पृथ्वी तल पर आया है।।
देख-देख कर अंक तुम्हारे, मेरा मन सुख पाता है।
जैसे उड़ि जहाज का पंछी, फिर जहाज पर आता है।।
योग्य पिता के योग्य पुत्र बन, भारी नाम कमाओगे।
मेहनत चीज बड़ी है सबसे, दुनिया को दिखलाओगे।।
हमको भी लालसा लगी है, उम्र पचहत्तर पायेंगे।
इंजीनीयर के फूफा बन कर, फिर बरात को जायेंगे।।
विदा में नोट नहीं कागज के लेंगे, लेंगे चांदी का सिक्का।
ऐरे-गैरे नहीं बराती, हम तो हैं छोरा के फूफा।।
अंकों की तो संघर्षों में, होती है होड़ा-होड़ी।
चिरंजीव और बुद्धिजीव हो, सौनू-मौनू की जोड़ी।"

- बाबूसिंह

ये सच्चे उद्गार हृदय के, भेजे शब्द पिरोकर।
ध्वस्त हुए सपने सब अपने, तुझे अचानक खोकर।।

इंजीनीयर के फूफा बन, वह बरात में जाते।
'मिलनी' में चांदी का रुपया, पाकर मोद मनाते।।

पर ईश्वर ने स्वप्न सभी के चूर-चूर कर डाले।
भाग्यहीन इन मात-पिता के पड़े हृदय में छाले।।

घाव नहीं ये कभी भरेंगे, जीवन सूना-सूना।
कण-कण में याद बसी है, दुख बढ़े देखकर दूना।।
लगता कोई पहलवान, जब मस्त झूम कर चलता।
ऊँचे थे अरमान सदा से, पता नहीं क्या बनता?
सीधे-सच्चे नेक-हृदय, जो हैं इंसान धरा पर।
छीन सदा भगवान स्वर्ग में, ले जाते हैं अक्सर।।
अच्छा होता उसे छोड़कर, मुझे स्वर्ग ले जाते।
वह माँ की ममता में जीता, दोनों ही सुख पाते।।
मैं पापी हूँ शायद ज्यादा, लगता माँ भी दागी।
माँ, भैया के बाद पुत्र भी, बिछुड़ा बड़ी अभागी।।
वह नीरोग रही कब बेटा? तुझे पता था उसका।
तुझे देखते ही क्षण भर को दुख घटता था उसका।।
बलिहारी थी तेरे ऊपर, श्याम वर्ण अति भाता।
चिंतित, बेकल घूमा करती, जब तक तू ना आता।।
सारे नखरे वह सह लेती, तू नखरों से रीता।
तुझे मनाया करती मैया दूध न जब तक पीता।।
तेरी इच्छा भांप कहूं क्यों, "इसको रोज सताती?
सेहत अच्छी है लाला की, फिर क्यों दूध पिलाती?"
ठगी-ठगी वह देखा करती, मन ही मन खुश होता।
तू बाजू पर सिर को रखकर, बड़े चैन से सोता।।
भुजा कट गयी मेरी अब, विकलांग हुआ हूँ जैसे।
बना सहारा था तू मेरा, भार उठाऊं कैसे?
ये भैया के दोस्त यहाँ पर, तेरे संगी साथी।
मुरझाये-से खड़े बिचारे, नैन बने औलाती।।
पुष्पेन्द्र, विनय, राजीव, नरेश, भैया तेरे आते।
पानी दे दे, चाय पिला दे, तुझको सभी बुलाते।।

पिंकी, रिंकू, सपना, दीपक, सौनी, सौनू हैं रोते।
काल-निर्दयी आया देखो अपना मौनू हैं खो ते।।

याद करेगी तेरी बहिना, राखी का दिन आए।
इंतजार कर थक जायेगी, किन्तु न तुझको पाए।।

हिलकी भर-भर कर रोयेगी, कह-कह भाई-भाई।
किन्तु न फिर भी बांध सकेगी, राखी तेरी कलाई।।

भैया दौज आयगी जब-जब, फूट-फूट कर रोये।
तुझे न पाकर घर में, अपना सारा धीरज खोये।।

जब सौनू को तिलक करेगी, हँसी न आ पाएगी।
मौनू! तेरी याद हृदय से कभी न जा पाएगी।।

जीजा जी से कौन कहे, साला हूँ औ' साली भी।
मैं पढ़ने में व्यस्त सदा, तुम आओ तो खाली भी।।

रे आलोक! किया क्या तूने, कौन बिठाने जाए?
हँसी-ठिठोली होली के दिन, कौन सताने आए?

होली के दिन तू जलजीरा, सबको खूब पिलाता।
नहीं भाँग की ठंडाई ये, सबको पूर्व बताता।।

'चिन्मय' दिन-भर ढूंढा करता, कहता मामा-मामा।
धमा-चौकड़ी करता रहता, पूरे दिन हंगामा।।

तुझको प्यारा लगता 'चिन्मय', उसे खिलाया करता।
गोदी लेकर गलियारे में, उसे घुमाया करता।।

अल्पआयु में साइलेंसर से तेरा पैर जला था।
रहा छुपाता दो घंटे तू, कैसे अरे! लला था।।

दर्द सहन करने की क्षमता, तू कैसी लाया था।
कोमल तेरे अंग रहे हा! हमें तरस आया था।।

वाहन से दो बार गिरा, पर रही घड़ी सुखदाई।
भ्रम में हम रह गये वत्स ने आयु बड़ी है पाई।।

कुछ घंटे पहले ही तूने, हस्तरेखा दिखलाई।
कहा बहिन से आयु रेखा, यह ज्यादा छोटी पाई।।

कौन सोच सकता था इतनी, छोटी तेरी रेखा?
इतनी जल्दी मोड़ लिया मुख, माँ ने भी ना देखा।।

असहनीय यह वज्रपात, शायद सहना था हमको।
हाथ रह गए मलते हम सब, रोएँ खोकर तुझको।।

जब तक जीवन शेष हलाहल, दुख का नित्य पियेंगे।
रखें त्रिलोकीनाथ उसी विधि, घुट-घुट विवश जियेंगे।।

किसी नृपति के मरने पर ज्यों रोती जनता सारी।
तू भी क्या राजा से कम है, जुड़ी भीड़ है भारी।।

मरा नहीं तू अमर हो गया, भूल नहीं पाएँगे।
बाल-गुणों की चर्चा में गुण, तेरे दुहराएँगे।।

•

फल लगने थे बाकी

आज बुढ़ापे की टूटी है/
बीच राह में लाठी।
अभी-अभी तो फूल खिले थे/
फल लगने थे बाकी।।

सात

देख, मुहल्ले के नर-नारी, बच्चे रोते हैं।
नाते-रिश्तेदार, मित्र भी, धीरज खोते हैं।।
सिसक रहें हैं सहपाठी सब, लंच न भाएगा।
ऐसा लगता अभी-अभी, कक्षा में आएगा।।
घर में किया प्रकाश बना आँखों का तारा है।
प्रतिभाशाली छात्र सभी के मन को प्यारा है।।
अल्प आयु में ही तूने, आलोक बिखेरा था।
मात-पिता के जीवन का तू बना सबेरा था।।
अंधकार कर चला गया, तू बन निष्ठुर भारी।
भूल हुई क्या ऐसी जो, रोती जननी बेचारी।।
जीवन भर तक रहे सालता यह दुखड़ा तेरा।
अन्त समय भी देख न पाई वह मुखड़ा तेरा।।
हृदय कष्ट है घोर, अश्रु वह अपने पीती है।
वत्स! तुम्हारे बिना हुई, वह रीती-रीती है।।
सत्रह सालों तक रिस्ता, यह हमने जोड़ा है।
किन्तु लाल यह रिस्ता पल में, तुमने तोड़ा है।।
अपनी माँ से वत्स किया यह कैसा धोखा है ?
सभी देखते रहे किसी ने तुझे न रोका है।।
ममता के आंचल से ढंककर तुझे खिलाया था।
मना-मना कर रोज रात को, दूध पिलाया था।।

तू कहता मैं दूध न पीऊँ, कॉफी मुझे पिला दे।
दूध बचे तो कल ही मैया, मीठी खीर खिला दे।।

वत्स! हमें मालूम चाहता तू हमको कितना था।
हम सच बैठे मान, किन्तु ये सब झूठा सपना था।।

किया काल ने कोप, कोप से बचा न पाया कोई।
मुझको देने दु:ख, लिवाने तुझको आया कोई।।

राहगीर ने चाहे थे जब तेरे प्राण बचाने।
किन्तु काल ने भेजी थीं, बाधाएँ किसी बहाने।।

घटना-स्थल पर लौट उसी ने, यह बतलाया था।
वह बच्चा है ठीक, न खतरा, कुछ समझाया था।।

गए हितैषी भूल नहीं सेवा की सोची थी।
जीवन की हर राह काल ने जैसे रोकी थी।।

आज बुढ़ापे की टूटी है, बीच राह में लाठी।
अभी-अभी तो फूल खिले थे, फल लगने थे बाकी।।

कैसे सब्र करेंगे हम, तू सबको रुला गया।
होता है विश्वास नहीं तू सचमुच चला गया।।

टूटा बड़ा पहाड़ दबे हम, सितम हुआ है भारी।
है दुर्भाग्य नहीं बच पाए, है अपनी लाचारी।।

●

थक जाते हैं नयन

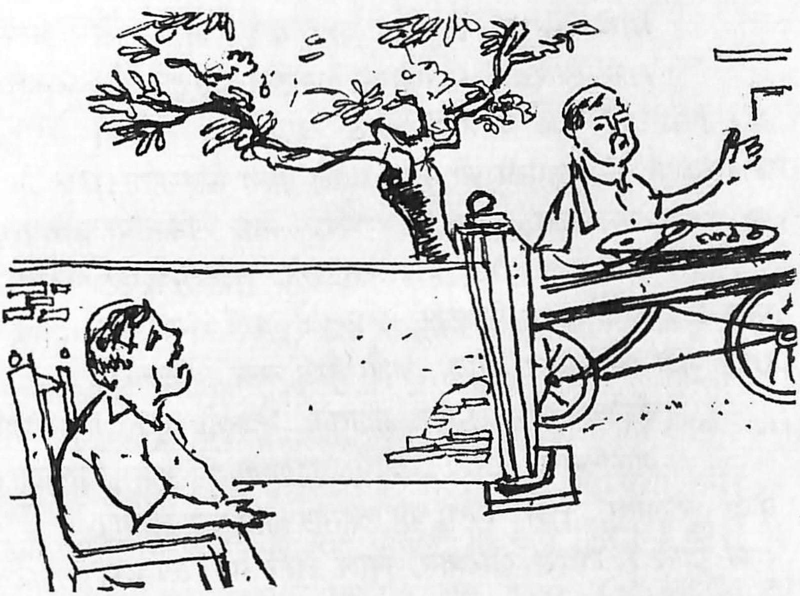

रोज रुलाता, तुझे पिता का/
ख्याल नहीं पर आता।।
थक जाते हैं नयन लौटकर/
लाल नहीं पर आता।

आठ

मेवा वाली खीर हमेशा तेरे मन को भाती थी।
इसीलिए माँ जल्दी-जल्दी, घर में खीर पकाती थी।।
छोले और भटूरे, दही-बड़े भाते थे भारी।
गर्म जलेबी, रसगुल्ले, सोहन-पपड़ी थी प्यारी।।
ले ठेला से चाट-पकौड़ी, बड़े चाव से खाता।
मना-मना कर अपनी माँ को, अपने साथ खिलाता।।
ठेलावाला आकर तेरी, राह निहारा करता।
बजा-बजा कर रोज कड़ाही, तुझे पुकारा करता।।
सुन करके आवाज निकल, आलोक यहाँ आयेगा।
और मुझे भी लगता मौनू, अभी दौड़ कर आयेगा।।
बोलेगा यह, पापा मुझको, टिक्की एक खिलाना।
गोल-गप्पे आप खाएँ, जलजीरा मुझे पिलाना।।
रोज रुलाता, तुझे पिता का ख्याल नहीं पर आता।
थक जाते हैं नयन लौटकर, लाल नहीं पर आता।।
केला और पपीता मीठा, तेरे मन भाता था।
बड़ी टोकरी, आम दशहरी मंडी से लाता था।।
जल्दी-जल्दी क्रीम पेस्ट्री, मुझसे तू मँगवाता।
खाता नहीं अकेला सबको, अपने साथ खिलाता।।
जब जाता बाजार साथ में, तुझको मैं ले जाता ।
वही दिलाया करता बेटे, जो भी तुझको भाता।।

किन्तु मुझे लगता था, तेरी मेरी कुछ यारी थी।
तुझसे मेरी पीठ, मुझे लगती जैसे भारी थी।।

तू मेरे सुख-दुख का साथी, आँखों का तारा था।
माँ के दुख से दुखी, हृदय का कितना उजियारा था।।

कौन किनारा दे नैया को? सोच हृदय घबराता।
जो भी घर में आता है, वह घंटों यह समझाता।।

मान पुत्र मत अपना उसको, क्यों इतना ज्यादा रोता है।
सुनकर जननी रो पड़ती, दुख और घनेरा होता।।

बेटा नहीं हमारा था, यह कैसे तुमने सोच लिया?
स्वयं कोख से जन्म दिया, पाला पोसा है बड़ा किया।।

बेटा तो वह मेरा ही था, अपना दूध पिलाया था।
फिर कैसे मैं यह कह सकती, वह पुत्र न मेरा जाया था।।

बनी निर्दयी अपने सुत को, आकर नहीं दुलार सकी।
भग्यहीन, मैं कर्महीन, छवि उसकी नहीं निहार सकी।।

कैसे धीरज धरूं प्रभू जी, बड़े लाड़ से पाला था।
वृन्दावन का कृष्ण-कन्हैया, वह जसुमति का लाला था।।

दुबला-पतला था बचपन में, हड्डी-हड्डी दिखती थी।
सो जाती तो सपने में, बस उसकी ही छवि खिलती थी।।

रोज किया करती मालिश, तब तुझको पुष्ट बनाया था।
चला ठुमक जिस रोज लाल, मन मैंने मोद मनाया था।।

अपनी एक पड़ौसिन वृद्धा, तुझ पर प्यार लुटाती थी।
रोजना घर आकर मेरे, तुझको दूध पिलाती थी।।

समय भूल जाती थी मैं, पर उसे न देर सुहाती थी।
कार्य-व्यस्त हो जाती मैं, वह ठीक समय पर आती थी।।

दूर हिमाचल की वृद्धा को, जाने तू क्यों भाता था?
पूर्व जन्म का उससे तेरा, लगता गहरा नाता था।।

अब सुन तेरा समाचार, वह पीड़ा से भर जाएगी।
असहनीय दुख होगा उसको, जीते जी मर जाएगी।।

टॉंसिल फूले, और कंठ में तेरे पीड़ा भारी थी।
ठन्डी कोई चीज न खा ले, रखती मैं हुशियारी थी।।

ज्यादा दुबला हुआ, रोग भी सचमुच ही दुखदाई था।
कैसे बढ़ती लम्बाई तू खाता रोज दवाई था।।

पाँच वर्ष की अल्प आयु में, जब टॉंसिल कटवाए थे।
श्रेष्ठ स्वास्थ्य के लक्षण तब से, तेरे तन में आए थे।।

हर मौसम में बढ़ती जाती, मेंड़-मेंड़ पर जैसे दूब।
चार माह सत्रह वर्षों में, ऊँचाई बढ़ आयी खूब।।

पाँच फीट ग्यारह इंचों की हुई गजब की लम्बाई।
मात-पिता, भाई, बहिना को, भायी तेरी तरुणाई।।

दौड़-दौड़ कर करे काम तू, आलस्य पास न फटका था।
नई सदी के स्वागत में तू, सबके सम्मुख मटका था।।

'हैपी न्यू ईअर' न., साल यह सिर्फ दुखों से भरी हुई।
देख लाल अपनी मैया को, लगती जैसे मरी हुई।।

इससे ज्यादा साल निकम्मी, मेरे घर क्या आएगी।
मुझे पता क्या इतनी जल्दी, उठा तुझे ले जाएगी।।

•

अश्रु ये कब तक बहेंगे

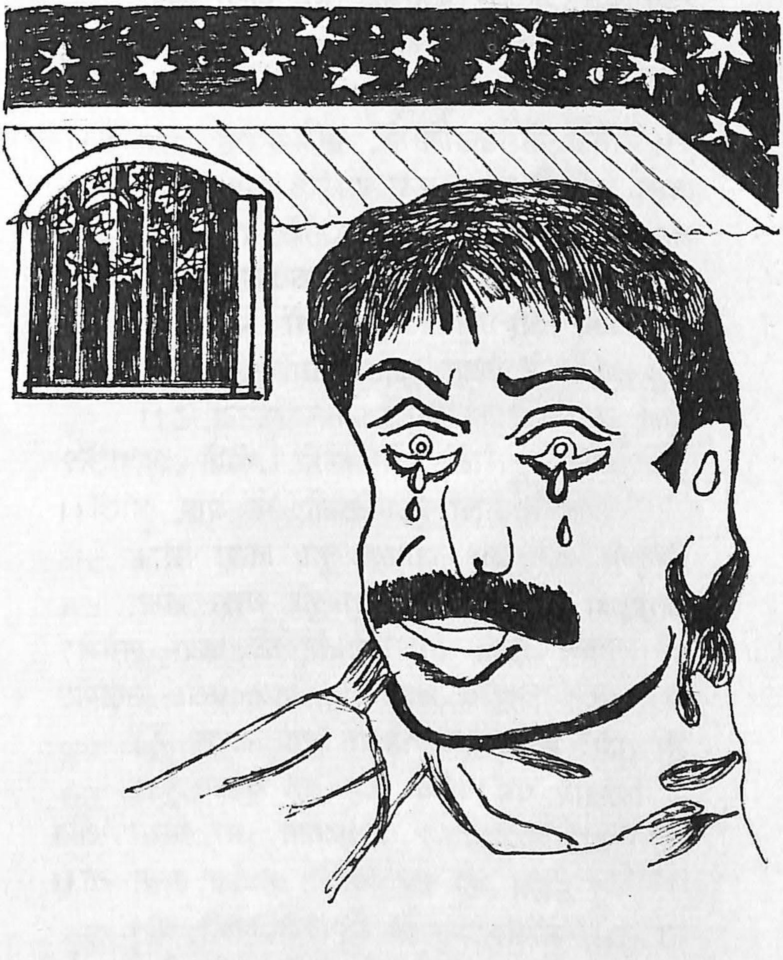

देखता हूँ, अश्रु ये कब तक बहेंगे?
इस हृदय का दर्द ये, कब तक कहेंगे?

नौ

देख लो कैसा जमाना आ गया है?
पेड़ खुद अपने फलों को खा गया है।।
नभ उतर कर भूमि पर ही आ गया है।
दिन के उजाले में, अंधेरा छा गया है।।
काल अपना जाल कुछ यों कस रहा है।
नाव खुद मांझी डुबो कर हँस रहा है।।
घोर दुःख से सब स्वजन हैं रो रहे।
गैर भी मुख आंसुओं से धो रहे।।
प्रभु-हृदय में क्या हुई ऐसी जलन है?
छीन कर जो ले गया मेरा ललन है।।
यदि भुलाने की कहो, कैसे भुलाऊँ?
अब अकेला हूँ, किसी भी राह जाऊँ।।
ज़िंदगी का वह सहारा हो गया था।
बिछुड़ना था, क्यों हमारा हो गया था?
गीत होठों पर खुशी के क्या गवेंगे?
नैन निर्झर बन गए सुर क्या सजेंगे?
मैं तुझे खोकर अकेला रह गया हूँ।
मैं किनारे पर पहुँच कर बह गया हूँ।।
ठोकरें खाकर सँभलना आ गया था।
तू हृदय को हर किसी के भा गया था।।
पा तुझे, मंजिल सुगम दिखने लगी थी।
सुख लिखा, तकदीर यह कहने लगी थी।।
चोट भारी पड़ेगी, अनभिज्ञ था मैं।
कृष्ण कब था? जो कि स्थिति प्रज्ञ था मैं।।

जानते थे वह, मरेंगे तीर से ही।
इसलिए विचलित हुए कब पीर से भी।।
किन्तु कैसे सह सकूँ, ये पीर मैं अब।
हे तनय! कैसे धरूँगा धीर मैं अब?
रात आधी हो गई सब सो रहे हैं।
एक हम हैं, जो कि अब भी रो रहे हैं।।
व्यर्थ में यह, आँख रोती जा रही है।
नींद उतनी दूर होती जा रही है।।
देखता हूँ, अश्रु ये कब तक बहेंगे?
इस हृदय का दर्द ये, कब तक कहेंगे?
जल नयन का सूख जाए आज सारा।
लौट कर ना आयगा 'आलोक' प्यारा।।
अब गमों के साथ जीता जाउँगा मैं।
और कड़वे घूंट पीता जाउँगा मैं।।
घाव गहरा है हृदय, क्या जी सकूँगा?
दुःख का धागा पिरो, क्या सीं सकूँगा?
जब कभी भी, प्रभु हमारा रूठता है।
तब अचानक 'नयन तारा' टूटता है।।
टूट कर जाता किधर? कोई बता दे।
राह बस उसकी मुझे, कोई दिखा दे।।
पुत्र तुझको ढूढ़ने आ जाउँगा मैं।
कर विनय प्रभु से, तुझे पा जाउँगा मैं।।
स्वप्न झूठे रोज ही आते रहेंगे।
बन ग़मों के श्याम-घन छाते रहेंगे।।
पुत्र तुम सुख से जियो, जाओ जहाँ पर।
किन्तु लम्बी आयु तुम, पाओ वहाँ पर।।

●

डोर प्रभु के हाथ में है

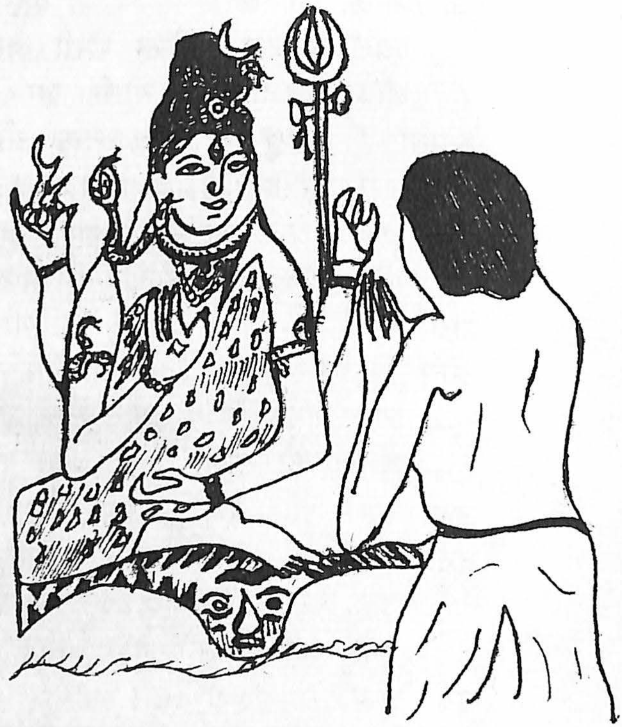

श्वास जब तक देह में, जीना पड़ेगा।
फट गया है जो हृदय, सीना पड़ेगा।।
सिर्फ, तेरी याद मेरे साथ में है।
जिंदगी की डोर, प्रभु के हाथ में है।।

दस

'काल' पर किसका चला है जोर कोई?
अति रुदन से भी न पड़ता फर्क कोई।।
मौत का निर्णय, बदल पाता नहीं है।
है हृदय पत्थर पिघल पाता नहीं है।।
निर्दयी, ये मौत कैसी आ गई है?
आज मेरे लाल को ही खा गई है।।
प्राण-प्यारा मुँह चुराये जा रहा है।
काल मेरा लाल खाये जा रहा है।।
यह विवशता देख लो, हा! आज मेरी।
हा! मदद कोई करे क्या आज मेरी ?
पुत्र अरथी पर लिटाया, मैं विवश हूँ।
लाल को ना रोक पाया, मैं विवश हूँ।।
लाल गहरी नींद में, मजबूर सोया।
पास लेटा, किन्तु मीलों दूर सोया।।
उम्र तेरी क्या रही? जो चल दिया है।
स्नेह जिनसे था तुझे, व्याकुल किया है।।
लालसा, मन की सुनाना चाहता हूँ।
मैं तुझे इतना बताना चाहता हूँ।।
पुत्र मुझको, ये कहानी चाहिए थी।
मुझको तेरी मौत आनी चाहिए थी।।
आज तू होता, मुझे कन्धा लगाता।
मैं न रहता, काश! तू अरथी उठाता।।
ले चला मजबूर होकर, देख ले तू।
बीच में ही मैं छला हूँ, देख ले तू।।
अंग कोमल, हाय! अब तेरे जलेंगे।
संग में अरमान भी, मेरे जलेंगे।।

देखते ही देखते, तू यों चला है।
ना पिता हूँ मैं, न तू मेरा लला है।।
लाल मेरे मोह ने, अंधा किया है।
इस जनम मैंने तुझे, कन्धा दिया है।।
जन्म अगले में, तुझे देना पड़ेगा।
लाल कन्धा तो तुझे देना पड़ेगा।।
विवश हूँ, अंतिम विदाई कर रहा हूँ।
दीखता जीता हुआ, पर मर रहा हूँ।।
भूल कुछ गम्भीर मुझसे हो गई है।
रूठकर तकदीर मेरी सो गई है।।
देव! कुछ उद्दण्डता यदि हो गई थी।
भूल से ही कुछ खता, यदि हो गई थी।।
तो क्षमा करना तुम्हारा काम है प्रभु।
विज्ञ करुणानिधि, तुम्हारा नाम है प्रभु।।
बन सका जितना, तुझे मैंने भजा है।
किन्तु फिर भी आपने, दे दी सजा है।।
इस सजा के बाद, जीना व्यर्थ है अब।
जिंदगी का रह गया, क्या अर्थ है अब।।
सोचता था, जिंदगी कट जाएगी यह।
शोक में, अब भूख भी मिट जाएगी यह।।
पेट है मक्कार, दूँ मैं दोष किसको?
खा रहा है रोटियाँ, धिक्कार इसको।।
पेट की कितनी निकम्मी भूख है यह।
मरे कोई, पर न मरती भूख है यह।।
श्वास जब तक देह में, जीना पड़ेगा।
फट गया है जो हृदय, सीना पड़ेगा।।
सिर्फ, तेरी याद मेरे साथ में है।
जिंदगी की डोर प्रभु के हाथ में है।।

●

सन्तोष कुमार सिंह

जन्म : 8 जून सन् 1951

सम्प्रति : इंडियन ऑयल कार्पोरेशन लिमिटेड, मथुरा रिफाइनरी में कार्यरत

लेखन : बाल कविताएँ, गीत, गज़ल, निबन्ध, व्यंग तथा कहानियाँ

प्रसारण : आकाशवाणी मथुरा से कविताओं का प्रसारण

प्रकाशन : विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में कहानी निबन्ध तथा कविताओं का प्रकाशन

कृतियाँ :
- परमवीर प्रताप (खण्ड काव्य)
- पेड़ का दर्द (पर्यावरण शिक्षा बाल गीत)
- सुन रे मीत नारी के गीत (गीत संकलन)
- आलोक स्मृति (शोक काव्य)- करस्थ

संपादन :
- मथुरा रिफाइनरी न्यूज जनरल (मासिक पत्रिका)
- मथुरा रिफाइनरी 'राजभाषिका' (मासिक पत्रिका)
- कल्प वृक्ष स्मारिका

प्रकाश-नाधीन :
- कहानी संग्रह
- नन्हीं दुनिया नन्हे गीत (बाल गीत)

सम्मान/पुरस्कार :
- कवि सभा दिल्ली से 'काव्य श्री' सम्मान
- पंडित रामनारायन शास्त्री 'कहानी पुरस्कार' इन्दौर (म०प्र०)
- इंडियन ऑयल मुख्यालय, नई दिल्ली द्वारा निबन्ध पर प्रथम पुरस्कार
- अनेक निबन्ध पुरस्कृत

सम्पर्क : चित्र निकेतन, बी 45, मोतीकुँज एक्सटेंशन, मथुरा (उ०प्र०)
फोन : 0565-400784

Library IIAS, Shimla
H 811.8 Si 64 A
00110633